CHAPTER - 13
तीसरी कसम के शिल्पकार शै लें द्र

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:

'तीसरी कसम' फिल्म को 'सेल्यूलाइड पर लिखी कविता' क्यों कहा गया है ?

उत्तर 1:

'तीसरी कसम' फिल्म का निर्माण उन्होंने हिन्दी साहित्य की मार्मिक कृति 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफ़ाम' को फिल्म के रूप में प्रस्तुत किया इस कारण इसको सेल्युलाइड पर लिखी कविता कहा गया।

प्रश्न 2:

'तीसरी कसम फिल्म' को खरीदार क्यों नहीं मिल रहे थे ?

उत्तर 2:

'तीसरी कसम' एक संवेदनापरक फिल्म थी, इसकी समझ वितरकों नहीं थी। फिल्म को करुणा के तराजू पर तौलने वाले वितरक नहीं थे जो उसकी वास्तविकता को समझ सकें। इसी कारण इस फिल्म को खरीदार नहीं मिल रहे थे।

प्रश्न 3:

शैलेंद्र के अनुसार कलाकार का कर्तव्य क्या है ?

उत्तर 3:

शैलेंद्र के अनुसार, कलाकार का कर्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचि की आड़ में उन पर अपनी मानसिकता को न थोपे उन्हें भी दर्शकों की मानसिकता का परिष्कार करना चाहिए।

प्रश्न 4:
फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर 4:
फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन इसलिए ग्लोरिफाई कर दिया जाता है, क्योंकि इसकी आड़ में वे दर्शकों का भावनात्मक शोषण करते हैं।

प्रश्न 5:
शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं'— इस कथन से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:
शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं' यह बिल्कुल ठीक है क्योंकि राजकपूर आखों से बात करने वाले कलाकार थे इसीलिए उन्होंने हीरामन के चरित्र में स्वयं को ढाल लिया था।

प्रश्न 6:
लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है । शोमैन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर 6:
जो कलाकार हर तरह की भूमिका करने में सक्षम हो उसे शोमैन कहा जाता है। राजकपूर में यह सभी खूबिया थीं इसलिए उन्हें एशिया का शोमैन कहा गया है ।

प्रश्न 7:
लेखक फिल्म 'तीसरी कसम' के गीत ' रातों दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की है ?

उत्तर 7:
संगीतकार जयकिशन ने इसलिए आपत्ति की थी क्योंकि दर्शक चार दिशाएं तो समझ सकते थे परन्तु दस दिशाएं उन्हें समझाना आसान नहीं था।

खंड – ख

प्रश्न 1:
राजकपूर द्वारा फिल्म की असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलेंद्र ने यह फिल्म क्यों बनाई ?

उत्तर 1:
भौलेंद्र भावुक और आदर्शवादी कवि थे। वह सुख व समृद्धि की कामना न रखते हुए आत्मसंतुष्टि व सुख की अभिलाशा के कारण यह फिल्म बनाई थी जबकि राजकपूर ने उनको पहले ही फिल्म की असफलता के खतरों से आगाह कर दिया था।

प्रश्न 2:
'तीसरी कसम'में राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन की आत्मा में उतर गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:
राजकपूर ने 'तीसरी कसम' में हीरामन की भूमिका निभाई थी वे इसमें इतने डूब गए कि दोनों में फ़र्क ही न रहा वो ऐसा खालिस देहाती गाड़ीवान था जो सिर्फ दिल की जुबान समझता था उसके लिए मोहब्बत के अलावा किसी दूसरी चीज का कोई अर्थ नहीं था वह खुद हीरामन में ढल जाता है और हीराबाई की फेनू–गिलासी बोली पर रीझता हुआ, उसकी 'मनुआ–टनुआ' जैसी भोली सूरत पर न्योछावर होता हुआ और हीराबाई की जरा सी उपेक्षा पर अपने अस्तित्व से जूझता हुआ सच्चा हीरामन बन गया ।

प्रश्न 3:
लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य–रचना के साथ शत–प्रतिशत न्याय किया है।

उत्तर 3:
'तीसरी कसम' फिल्म फणीश्वरनाथ रेणु की कृति पर आधारित थी। उसकी जो भावनाएं और पात्र थे उन्हें ठीक वैसा ही पर्दे पर उतारा गया था। कलाकारों ने भी पात्रों को पूर्ण रूप से जिया था इसलिए कहा जा सकता है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य रचना के साथ शत्–प्रतिशत् न्याय किया है ।

प्रश्न 4:
शैलेंद्र के गीतों की क्या विशेषताएं हैं ? अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर 4:
शैलेंद्र के गीतों की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

- इनके गीतों में धन तथा यश की कामना नहीं है।
- इनके गीतों में करुणा और ज़िदगी से जूझने के संकेत हैं ।
- इनके गीत आदमी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रश्न 5:
फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
उत्तर 5:
फिल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

- उन्होंने भाव प्रवणता को महत्तव दिया।
- वे दुख को भी सहज स्थिति में प्रस्तुत करते थे।
- वे दर्शकों की रुचि का परिष्कार करना चाहते थे।

प्रश्न 6:
शैलेंद्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है कैसे ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर 6:
शैलेंद्र कवि होने के साथ–साथ साधारण जीवन जीने में विश्वास रखते थे तथा यश और धन के लोभी नहीं थे इनके गीत नदी के शांत प्रवाह और सागर की गहराई लिए हुए थे यही विशेषता उनकी फिल्म में भी दिखाई दी। क्योंकि उन्होंने आत्म संतुष्टि के लिए ही इस फिल्म का निर्माण किया था।

प्रश्न 7:

लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फिल्म कोई सच्चा कवि–हदय ही बना सकता है, आप कहाँ तक सहमत हैं ?स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 7:

'तीसरी कसम' भावुकता प्रधान फिल्म है। इसमें सिर्फ भावों की ही प्रमुखता है। कलाकार पात्र के चरित्र में पूरी तरह ढले हुए हैं। आम निर्माता इन भावों की गहराइयों को नहीं समझ सकता था। कवि हदय व्यक्ति ही इन भवनाओं को समझ सकता था। अतः सह सही ही कहा गया है कि इस फिल्म को कोई कवि–हदय व्यक्ति ही बना सकता था।

खंड – ग

आशय स्पष्ट कीजिए

1.

वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार संपत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्म–संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी ।

उत्तर 1:

लेखक शैलेंद्र के बारे में बताते हैं कि उनमें यश तथा संपत्ति की कामना नहीं थी। वे आदर्शों में विश्वास रखते थे तथा भावुक कवि थे उनके लिए आत्मसंतुष्टि ही सब कुछ थी ।

2.

उनका यह दृढ़ मन्तव्य था कि दर्शकों की रुचि की आड़ में हमें उथलेपन को उन पर नहीं थोपना चाहिए। कलकार का यह कर्तव्य है कि वह उपभोक्ता की रुचियों का परिष्कार करने का प्रयत्न करे।

उत्तर 2:

शैलेंद्र का मानना था कि हमें दर्शकों की रुचि के अनुसार ही काम नहीं करना चाहिए इसकी आड़ में उथलेपन को नहीं थोपना चाहिए। कलाकार का दायित्व यह भी है कि वह उपभोक्ता की रुचियों को सुधारने का प्रयास करे ।

3.

व्यथा आदमी को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है ।

उत्तर 3:

लेखक कहता है कि समाज में दुख के प्रति गलत नजरिया है । व्यथा मनुष्य को तोड़ती नहीं है। उसे हराती नहीं है। वह उसे प्रेरणा देती है कि वह आगे बढ़े और जीत हासिल करे।

4.

दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।

उत्तर 4:

उत्तरः इस पंक्ति में फिल्म वितरको की व्यावसायिक मानसिकता पर कटाक्ष किया गया है। 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी तथा अभिव्यक्ति व्यावसायिक वितरकों की समझ से परे थी ।

5.

उनके भाव–प्रवण थे– दुरूह नहीं ।

उत्तर 5:

उत्तरः शैलेंद्र के गीत भावना प्रधान थे। वे मानव की संवेदना को छूने वाले थे। उनमें कठिनता नहीं थी, वे भावों की सहज अभिव्यक्ति करते थे।